

तदीश्वरः KATHÁS. 28, 182. द्विजाः *blossgelegte Zähne* BHĀG. P. 6, 6, 41. 10, 61, 37. °स्मयन *ein Lächeln, wobei man die Zähne zeigt*, ĀCV. ÇA. 12, 8, 5. *offen zu Tage liegend* MBH. 1, 2246. VARĀH. BRH. S. 68, 111. Spr. 3303. अ्रवसर *eröffnet, dargeboten* BHĀG. P. 5, 2, 6. विवृतम् *vor aller Augen* MBH. 13, 6225. विवृतस्त्रान् PĀR. GRHJ. 2, 7. नहि शक्नोति विवृते प्रत्याख्यातुं नराधिपम् *gerade heraus oder öffentlich* MBH. 4, 344. *enthüllt, kundgethan, offenbart, auseinandergesetzt; = विस्तृत* MED. I. 156. वेदाः MUND. UP. 2, 1, 4. पौरुष Spr. 4464. मन्त्र MBH. 12, 36. श्रामन् HARIV. 4242. RAGH. 15, 93. KUMĀRAS. 3, 11. ÇĀK. 44. BHĀG. P. 8, 24, 38. PAÑKĀR. 2, 7, 30. KULL. zu M. 2, 220. SARVADARĀNAS. 31, 15. 38, 12. 87, 1. 94, 3. 148, 19. वीवृत *kundgethan* Verz. d. Oxf. H. 21, a, 26. — 2) *verdecken, verhüllen, verstopfen*: वसनस्येव चिह्नणि साधूनां विवृणोति यः MBH. 3, 13755. विशेषतः पिदधाति NILAK.; offenbar fehlerhaft für विवृणोति (s. u. अयि). — विवृतेः HARIV. 3926 fehlerhaft für विवृतेः, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. विवर, विवराण, विवृता, विवृति.

— सम् 1) *zudecken, verhüllen, verbergen*: अस्मसहिता धाराः संवृणवत्यः समन्ततः MBH. 3, 10981. MRĀKH. 46, 18. SĀJ. zu RV. 1, 82, 5. राज्ञो लोचने संवृणोति VIKR. 47, 12. (शराः) शलभा इव संवृणवाना दिशो दश MBH. 7, 1339. वस्त्रेण संवृत्य मुखम् 2, 2623. संवृत्याकारमात्मनः KATHÁS. 31, 88. व्याधातौ हि मरुता मे संवृतुं नृप दुष्करौ MBH. 4, 52. *verschliessen*: दारण्येतानि यो ज्ञात्वा संवृणोति 3, 1484. संवृत *verdeckt, bedeckt, eingehüllt in, verhüllt* H. 1476. HALĀJ. 4, 58. घृयमुं वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः प्र सोमं इन्द्र सर्पतु *der Soma beschleiche dich, wie man verhüllt zu Weibern schleicht*, AV. 8, 17, 7. मलेन MBH. 3, 2699. विषेण 2623. उत्खेन BHĀG. P. 3, 31, 8. चर्मणा M. 11, 108. वाससो ऽर्धेन MBH. 3, 2335. वल्कल्लजिनं R. 1, 1, 31 (33 GORR.). 2, 73, 30. JĀGĒ. 3, 199. VARĀH. BRH. 27 (23), 16. 32. BHĀG. P. 4, 4, 24. सुं MBH. 1, 4934. 4940. नोलास्त्वकवृन्दं (अनन) BHĀG. P. 4, 23, 31. काञ्चनेः कमलैः R. 4, 44, 14. पाण्डुकम्बलं (नौ) 2, 89, 13. असंवृता संस्तरणेन मेदिनीम् R. GORR. 2, 8, 59. असंवृतायां भूमौ *auf der blossen Erde* 9, 35, 5, 21, 4. चन्द्रलेखा नीलाश्रसंवृता MBH. 3, 2671. तमसा सूर्यः R. 1, 74, 14. 4, 39, 9. KĀM. NĪTIS. 16, 23. PAÑKĀR. 4, 2, 63. BHĀG. P. 1, 7, 30. अङ्गुलिसंवृताधरोष्ठं ÇĀK. 73. मरुता मेखलेन सुसंवृतः *so v. a. umgürtet* R. 5, 24, 26. सौधप्राकारं *umgeben von* R. SCHL. 2, 80, 19. 80, 19 (87, 22 GORR.). 5, 56, 67. पुलिने जलसंवृते 4, 24, 30. VARĀH. BRH. S. 54, 40. कारसंवृतमध्या *so v. a. mit der Hand umspannt* R. 3, 52, 35. कंधरात्तरं 4, 10, 22. ब्राह्मणपत्रैः *umgeben von* MBH. 3, 571. 1017. 2070. 5, 2223. R. 2, 34, 16 (33, 14 GORR.). 96, 3. R. GORR. 1, 79, 26. 109, 11. 4, 13, 10. VER. in LA. (III) 5, 16. सखीभिः सह संवृता HARIV. 4399. *verborgen, versteckt, geheim gehalten* KAUSH. UP. 1, 1 (n. ein verborgener Ort). गृहं MBH. 1, 5722. 4, 140 (सुं). 571. R. GORR. 2, 101, 13. 5, 13, 25. 53, 4. 69, 2. PAÑKĀR. 91, 2. भिन्नुत्प्रेषण R. 3, 52, 14. °संवर्ष Spr. 4464. ÇAT. BR. 14, 6, 8, 8. MBH. 1, 2246. R. 5, 40, 8. मन्त्र KĀM. NĪTIS. 8, 9. RAGH. 1, 20. 7, 27. ÇĀK. 44. VIKR. 43, 5. VARĀH. BRH. S. 68, 54. KATHÁS. 54, 110. BHĀG. P. 1, 18, 17. 4, 16, 10. Verz. d. Oxf. H. 29, a, 6. सुसंवृत *sehr auf seiner Hut seiend* MĀRK. P. 32, 22. स्वेऽं (सुं?) *dass* M. 7, 104. *geschlossen*: संवृतापणवेदिका (so die ed. Bomb.) R. 2, 42, 23. कारं VARĀH. BRH. S. 68, 39. लज्जासंवृतलोचन MBH. 3, 1835. 6, 5823. किङ्क Spr. 4244. °सर्वकारकं BHĀG. P. 8, 6, 16. काष्ठस्य खे विवृते संवृते वा RV. PRĀT. 13, 1. संवृतो ऽकारः AV. PRĀT. 1, 36. Ind.

St. 4, 118. fgg. Schol. zu P. 1, 1, 9. 8, 4, 68. *eingeschlossen in*: घटं (आकाश) Schol. zu KAP. 1, 51. अयं पटः संवृत एव शोभते *eingeschlossen so v. a. verwahrt, bei Seite gelegt* MRĀKH. 33, 17. लेशसंवृतचेतना *geschlossen so v. a. unthätig* R. 5, 30, 12. *besetzt, in Beschlag genommen* MBH. 3, 14870. fg. *erfüllt, voll von* ÇAT. BR. 14, 3, 5, 18. शक्तिभूमिः R. 1, 54, 21 (55. 21 GORR.). तिमिनागं (क्रुद) 2, 81, 16. भयं BHĀG. P. 10, 4, 35. युद्धाद्ब्राह्मणसंवृतात् *so v. a. von einem Kampfe, an dem auch Brahmanen Theil nehmen*, MBH. 1, 7118. *versehen mit, begleitet von*: तुल्याभिजनं 3, 2677. धर्मं (भारती) 4, 914. ब्राह्मण्यं दुर्लभतरं संवृतं परिपन्थिभिः 13, 1920. *vielleicht so v. a. mit Allem wohl ausgerüstet* 1814. — 2) *zusammenlegen, in Ordnung bringen*: पावद्वस्त्रं च वेणीं च विन्नस्तो संवृणोम्यकम् KATHÁS. 64, 38. पाशान्संवृणितुम् HIT. 23, 11, v. l. *med. etwa sich sammeln, — vereinigen*: समिधौ वरुत RV. 1, 121, 15. — 3) *hemmen, abwehren*: संवृणोषीष्ठास्त्रं शत्रोः पराक्रमम् BHĀT. 9, 27. *Jmd abweisen, zurückweisen* KATHÁS. 30, 22. संवृत *gehemmt, unterdrückt*: °मैथुन HARIV. 1365. अग्निमुखे मयि संवृतमीक्षितम् ÇĀK. 44, v. l. *gedämpft (= समान Comm.)* RV. PRĀT. 15, 10. — 4) असंवृत *Bez. einer Höhle* M. 4, 81. — 5) संवृत *vielleicht fehlerhaft für संभृत in der Stelle*: वाजपेयसकृन्नाणां सकृन्नेः सुसंवृतेः MBH. 7, 2386. — Vgl. संवर, संवराण, संवृति. — *caus. zurückhalten, abhalten, abwehren*: प्रविशसं वने द्वारि गन्धर्वाः समवारयन् MBH. 3, 14868. अस्त्रैरस्त्राणि संवार्य 4, 2057. 13, 1981. HARIV. 6682. MBH. 3, 14994.

— अभिसम् *verdecken, verhüllen*: अर्कं च सकृन्ना दीप्तं स्वर्भानुरभिसंवृणोत् MBH. 3, 7239. अभिसंवृत *bedeckt, verdeckt, verhüllt*: श्वेतच्छत्राभिसंवृत 7, 1501. सर्वं बाणाभिसंवृतम् HARIV. 8075. R. GORR. 2, 125, 11. शोकजालेन मरुता विततेन 5, 18, 10. वस्त्रार्थेन MBH. 3, 2731. 2908. शैली नीकरेण 1, 6022. रजसा सूर्यः 7, 667. Spr. 2969. *umgeben von*: सागरेण R. 5, 9, 14. PAÑKĀR. 3, 11, 14. कुरुभिः MBH. 5, 3239. 6, 2415. HARIV. 5071. 11406. R. 2, 42, 22 (41, 20 GORR.). 3, 63, 13. 5, 53, 18. 6, 2, 32. 92, 83. *erfüllt von, besetzt mit, voll von*: निरुत्तरमभूत्तत्र जनैधिरभिसंवृतम् MBH. 2, 911. यदेभिर्मकरावासः 7, 400. विविधजनाभिसंवृता (पुरी) R. 7, 70, 17. शोकाभिसंवृता 4, 19, 5. *verbunden —, versehen mit, im Verein mit*: वीरलक्ष्म्या MBH. 18, 5. इदं देवर्षिचरितं सर्वतीर्थभिसंवृतम् (पठन्) 3, 8261. 13, 6765. किलकिल्लाशब्दः प्रभाजालाभिसंवृतः HARIV. 6813.

— समभिसम्, °समभिसंवृत *umgeben*: रथवंशेन MBH. 6, 4497. 2. वृ, वृणोति, वृणुते (वरुणो) DHĀTUP. 27, 8. वृणाति, वृणीते (वरुणो) 31, 16. 20. अवरुणो 1. sg. RV. 10, 33, 4. (आ) वरुम्, वरुत; ववार, वने. ववृषे, ववृमहे; अवरुष्ट, अवृत, वृत, अवृथास्, अत्रि 1. sg. RV. 4, 55, 5. अवृषत 3. pl., वुरीत RV. 5, 50, 1. 6, 14, 1. वरुषीष्ट; वरितुम्, वरीतुम्; त्रियताम्, वृत; *sich erwählen, vorziehen, wünschen; lieber wollen als (abl., ausnahmsweise instr.), lieben*: दूतम् RV. 1, 44, 3. हेतारम् 58, 7. सोमम् 32, 3. घोषावृणीत पुवां पती 119, 5. वयमव इतै वृणीमहे 114, 9. इषं वरुमरुण्यो वरुत 140, 13. 187, 2. सखायस्त्वा ववृमहे देवं मतीम् ऊतये 3, 9, 1. 12, 3. 36, 8. ज्योतिर्वृणीत तमसो विज्ञानन् *vorziehen* 39, 7. अस्मौ इहा वृणीष सख्याय 4, 31, 11. सोमात्सुतादवृणीता वसिष्ठान् 7, 33, 2. 9, 88, 1. अयो वृणानः पवते 94, 1. कुरुअवृणामावृणो मरुष्टे वाघतामृषिः 10, 33, 4. वा विषो वृणातो राड्याय AV. 3, 4, 2. अयुक्तामन्यौरुषेयादृणानो देव्य वचः 7, 103, 1. यामिः सत्यं भवति यदृणीषे 9, 2, 25. 10, 4, 21. असनु ष प्र पूर्य इषं वुरीतावसे *Trank mag er sich wählen d. h. sich nehmen zur*